CHAPTER 42

MUSIC & FINE ARTS

Doctoral Theses

01. KESHAV KUMAR DHEERAJ
Comparative Study of Darbhanga and Bettiah Dhrupad Traditions with Special Reference to their Compositions.
Supervisor: Prof. Gurinder Harnam Singh
Th 28404

Abstract

The most Basic form of Sound is "Acoustic Sound" that is the result of Vibrations propagating through Air or other mediums. These vibrations strike our eardrums and we can hear that sound. Acoustics is the science that studies how sound is made, travels, and is heard in the real world. This study includes things like frequency, loudness etc and how sound waves behave in different environments. Studying acoustics helps in designing studios. In the electronic domain, sound is represented as continuous electrical signals that directly correspond to the original sound waves. When a sound is captured, such as by a microphone, the vibrations of air pressure are converted into an electrical signal that mirrors the shape and frequency of the original sound wave. Electronic sound retains the smooth, uninterrupted nature of the original audio, preserving the full range of frequencies and details. Studying Electronic domain helps in Preserving Audio Quality and understanding Historical and Technological Relevance. The study of Digital domains came into existence with the rise of computer and digital technology. Whereas analogue sound which is continuous, digital sound is stored in the form of binary data, which allows users to manipulate the sound waves and create music with great accuracy. Sound is converted from analogue to digital form using processes like ADC (analog-to-digital conversion) which is easy to store, edit and share. Nowadays, digital sound has become the most widely used format, particularly in music production and distribution, because of its versatility and software manipulation potential. Digital technologies DAWs (Digital Audio Workstations) MIDI (Musical Instrument Digital Interface) etc, have greatly changed how we access and enjoy sound.

Contents

1. Origin and Development of Dhrupad 2. The Dhrupad Tradition 3. The Dhrupad Tradition of Darbhanga 4. The Dhrupad Tradition of Bettiah 5. The Dhrupad Composition of Darbhanga Dhrupad Tradition 6. Comparision of Darbhanga And Bettiah Dhrupad Traditions 7. Interview, Conclusion, Bibliography, Appendix.

02. खान (सुहेल सईद)
दिल्ली घराने के तबला वादक पद्मश्री उस्ताद शफ़ात अहमद ख़ाँ का भारतीय संगीत में योगदान।
निर्देशिका : प्रो. अलका नागपाल
Th 28732

सारांश

This thesis presents a comprehensive study of Padma Shri Ustad Shafaat Ahmed Khan, the eminent tabla maestro of the Delhi Gharana, and his significant contribution to Indian music. Ustad Shafaat Ahmed Khan was not only a brilliant performer but also a devoted teacher and a key preserver of the Indian rhythmic tradition. The research explores his life, musical training, unique playing style, teaching legacy, and his role in promoting and enriching the Delhi Gharana tradition. Placed within the context of contemporary Indian classical music, this study aims to highlight his enduring impact on the art of tabla and its cultural heritage.

विषय सूची

भारतीय संगीत में घराना तथा अन्य घरानों का इतिहास 2. हिन्दुस्तानी संगीत के परिपेक्ष्य में दिल्ली घराने की परम्परा तथा इतिहास 3. उस्ताद शफात अहमद खॉं का जीवन एवं कृतित्व 4. उस्ताद शफात अहमद खॉं के बारे में कलाकारों एवं रिश्तेदारों के मत। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

03. गंगा प्रिया

श्री हरिदासी (सखी) संप्रदाय के संगीत का आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत से तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. प्रेरणा अरोड़ा

Th 28408

सारांश

शोध सार भारतीय संगीत की आधारशिला प्राचीन काल से ही आध्यात्मिकता के भाव से ओत-प्रोत रही है। जिसका शुद्ध स्वरूप कालान्तर में यदि कहीं सुरक्षित था तो वह मध्यकालीन विष्णु मंदिरों में ही रहा। चूंकि वृन्दावन प्रमुख रूप से भक्ति एवं संस्कृति का केंद्र रहा है अतः वहां अनेक संत व रसिक अपने भावों को अपने आराध्य के सम्मुख विभिन्न प्रकार से निवेदित करते आए हैं। इन्हीं संतों की अपनी विशिष्ट सेवा पद्धति के कारण वृंदावन में अनेक मंदिर व उनसे संबंधित संप्रदाय पुष्पित व पल्लवित हुए। जहां वृंदावनीय संगीत अर्थात् समाज गायन की झलक भी देखने को मिलती है जैसे - राधा वल्लभ सम्प्रदाय का राधा वल्लभ मंदिर, हरिदासी सम्प्रदाय का निधिवन एवं टटिया स्थान आदि, गौडीय संप्रदाय का श्री राधा मदन मोहन मन्दिर (भट्ट जी की हवेली), निंबार्क संप्रदाय का निंबार्क कोट आदि। इन सभी संप्रदायों के आचार्यों ने अपने प्रिया - प्रियतम को रिझाने के लिए संगीत का ही आश्रय लिया है। वृंदावन के यही मंदिर गहरे रहस्यों से भरे हुए होने के कारण विभिन्न कलाओं एवं संस्कृति से भी समृद्ध रहे हैं जैसे - ब्रज की होरी, ब्रज की सांझी, ब्रज देवालय संगीत, ब्रज का नृत्य, ब्रज की मल्ल क्रीड़ा आदि। कालान्तर में यहीं से भारतीय संगीत मध्यकालीन राज दरबारों तक पहुंचा तथा शास्त्रीय संगीत की दरबारी ध्रुपद परंपरा की एक धारा समय के साथ परिवर्धित एवं परिमार्जित होती हुई आधुनिक हिंदुस्तानी संगीत के अंतर्गत ख्याल गायन शैली के नाम से प्रचार में आई। प्रस्तुत शोध प्रबंध वृंदावन में प्रचलित विभिन्न संप्रदायों में से वर्तमान में प्रचलित श्रीहरिदासी संप्रदाय के संगीत पर कैंद्रित है जिसका शुभारंभ मध्यकालीन 16 वीं शताब्दी रहा तथा यहां गाया जाने वाला संगीत वृंदावन में समाज

गायन के नाम से प्रचलित है जिसका तुलनात्मक अध्ययन आधुनिक समय में प्रचलित हिंदुस्तानी संगीत से किया गया है।

विषय सूची

1. श्रीहरिदासी संप्रदाय का परिचय 2. श्री हरिदासी संप्रदाय का संगीत (स्वरलिपि अध्ययन सहित) 3. श्रीहरिदासी सम्प्रदायकी समाज में गाए जाने वाले कुछ प्रमुख रागों का हिन्दुस्तानी संगीत के रागों से तुलनात्मक अध्ययन 4. श्रीहरिदासी सम्प्रदाय के कुछ अन्य रागों का संक्षिप्त परिचय 5. श्री हरिदासी सम्प्रदाय के संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य, ताल एवं गायन शैली का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। परिशिष्टियॉं। संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. गुप्ता (राहुल)

वर्तमान संगीतिक परिवेश में ध्वनि अभियांत्रिकी (साउंड इंजीनियरिंग) की उपयोगिता एवं व्यवसायिक आयाम ।

निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

<u>Th 28407</u>

सारांश

वर्तमान सांकेतिक परिवेश में ध्वनि अभियांत्रिकी (साउंड इंजीनियरिंग)का अपना ही एक महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत के क्षेत्र में व्यावसायिक दायरा अब केवल मंच प्रदर्शन तथा संगीत शिक्षण तक ही सीमित नहीं रहा है। संगीत से संबंधित व्यक्ति एवं छात्र यदि साउंड इंजीनियरिंग को अपने जीवन में जोड़ लें तो उसके बाद व्यवसाय के लिए अनेकों रास्ते खुल जाते हैं। वर्तमान समय में एक अच्छा संगीतकार बनने के लिए उसके अंदर म्यूजिक में रुचि क्रिएटिविटी तालमेल और टेक्निकल ज्ञान का होना सबसे जरूरी है इसके अलावा टीम स्पिरिट, सेंस आफ पिच ,टाइमिंग तथा रिदम जैसी स्किल होनी चाहिए, साथ ही कंप्यूटर ज्ञान ,सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर से संबंधित एडवांस टेक्नोलॉजी और उसमें प्रोग्रेस की जानकारी होने से अपनी संगीतिक जीवन को एक अच्छे स्तर तक ले जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य के विस्तृत अध्ययन की सुविधा को देखते हुए इसे चार अध्यायों में विभक्त कर शोध कार्य को संपन्न करने का प्रयास किया गया है। प्रथम अध्याय में ध्वनि विज्ञान एवं संगीत का परिचय, ध्वनि अभिलेखन, ध्वनि व्यवहार समस्याएं एवं समाधान पर चर्चा की गई है द्वितीय अध्याय में ध्वनि अभियांत्रिकी का परिचय एवं कार्य प्रणाली ,ध्वनि अभियांत्रिकी हेतु मुख्य उपकरण तथा ध्वनि अभियांत्रिकी एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में बताया गया है तृतीय अध्याय में संगीत में व्यवसाय एवं उसका महत्व, ध्वनि अभियांत्रिकी एवं संगीत के समन्वय से उत्पन्न व्यावसायिक संभावनाएं तथा वर्तमान समय में होम रिकॉर्डिंग स्टूडियो का बढ़ता हुआ प्रचलन के बारे में बताया गया है तथा अंतिम अध्याय में कुछ प्रमुख ध्वनि के अभियंताओं के साक्षात्कार तथा संगीत के व्यवसायीकरण में डिजिटल मार्केटिंग व सोशल मीडिया कि अहम भूमिका एवं कोविड-19 कोरोना महामारी काल में संगीत की व्यावसायिक दशा, इस पर चर्चा करते हुए इस शोध कार्य को पूर्ण किया गया है ।

विषय सूची

1. ध्वनि - विज्ञान एवं संगीत 2. ध्वनि-अभियांत्रिकि (साउंड इंजीनियरिंग)- एक अध्ययन 3. संगीत एवं व्यवसाय 4. साक्षात्कार एवं अन्य पक्ष। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. गोस्वामी (मानु)

हिंदुस्तानी संगीत में गोस्वामी घराने का सांगीतिक योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्यन्न।

निर्देशिका : प्रो . अलका नागपाल

Th 28812

सारांश

मैंने अपने शोध कार्य में हिन्दुस्तानी **संगीत में गोस्वामी घराने के सांगीतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्यन्न किया है।**

विषय सूची

1. हिन्दुस्तानी संगीत और घराना 2. हिन्दुस्तानी संगीत में गोस्वामी घराना 3. दिल्ली का गोस्वामी घराना 4. गोस्वामी घराने की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 5. गोस्वामी घराने की कुछ बंदिशों की स्वरलिपि। उपसंहार। परिशिष्टियाँ। संदर्भ ग्रंथ सूची।

06. त्रिपाठी (कृतिका)

विदुषी किशोरी अमोनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन

Th 28410

सारांश

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गानसरस्वती किशोरी अमोनकर को एक उत्कृष्ट स्थान प्राप्त है। अपने आध्यात्मिक चिंतन, बुद्धि-सामर्थ्य, सृजनशीलता और सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण के आधार पर उन्होंने अपनी एक विशिष्ट शैली का निर्माण किया। प्रस्तुत शोधकार्य के अध्ययन के उपरांत यह देखने को मिलता है कि विदुषी किशोरी अमोनकर का संगीत भक्ति, सुंदरता, भावनाओं और रागदारी का अनोखा मेल था। उनके लिए संगीत ईश्वर से जुड़ने का एक माध्यम था। उन्होंने अखंडित लगन, निरंतर अभ्यास और संपूर्णता की चाह लेकर, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में एक अलग ही मुक़ाम हासिल किया। विदुषी किशोरी अमोनकर जैसा व्यक्तित्व और प्रतिभा केवल आज के समय की धरोहर नहीं है, बल्कि वह आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा और आदर्श बनी रहेंगी।

विषय सूची

1. ख़्याल गायल का जयपुर - अतयौली घराना : परिचय एवं संगीत परंपरा 2. विदुषी किशोरी अमोनकर का जीवन दर्शन एवं व्यक्तित्व 3. विदुषी किशोरी अमोनकर की गायकी की विशेषताएँ 4. विदुषी किशोरी अमोनकर का कृतित्व एवं सांगीतिक योगदान। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

07. NUSRAT

Contribution of Pandit Bhajan Sopori to Indian Music with Special Reference to Kashmir.

Supervisor: Dr. Surendra Nath Singh

Th 28813

Abstract

This research explores the life, music, and legacy of Pandit Bhajan Sopori, a legendary Santoor maestro, composer, and visionary who reshaped the cultural and musical identity of Kashmir. Through an analytical and interpretive study of his artistic journey, compositions, innovations, and mentorship, the thesis examines his role as a performer, composer, guru, reformer, and cultural ambassador who bridged the traditional and the contemporary. The study highlights how, from his early childhood performances to his mature years, Pandit Sopori pioneered a musical renaissance in Kashmir, integrating classical, folk, and Sufi idioms into a unified musical expression. His creative genius transformed the Santoor from a regional Sufi instrument into a recognized solo instrument of Indian classical music, through innovations such as the development of the Sopori Baaj, introduction of Dhrupad Ang, and expansion of its tonal and rhythmic dimensions. Equally significant was his role in empowering women in Kashmiri music, offering a dignified platform to female artists at a time when societal attitudes were restrictive. By nurturing and collaborating with stalwarts like Shameema Dev Azad, Kailash Mehra, and Sushma Dutta, he challenged gender norms and inspired a generation of women to pursue music with confidence and respect. As a guru and cultural reformer, Pandit Sopori founded SaMaPa (Sopori Academy of Music and Performing Arts), creating opportunities for young musicians and promoting cultural dialogue across India. His compositions for All India Radio, along with his orchestral, devotional, and fusion works, embody his vision of music as a tool for peace, national integration, and spiritual elevation. The findings establish that Pandit Bhajan Sopori was not only a pioneering musician but also a philosopher of sound, whose art transcended boundaries of genre, region, and religion. His enduring contributions—technical, aesthetic, and humanitarian—have left an indelible imprint on Indian music and culture. In essence, this study reaffirms that Pandit Bhajan Sopori's life represents the harmony of tradition and innovation, art and compassion, and individual brilliance devoted to the collective upliftment of society through the eternal language of music.

Contents

1. Historical Background of Kashmir 2. The Traditional Music of Kashmir 3. Origin of Santoor in Kashmir 4. Origin and Lineage of Sopori Gharana 5. Life Sketch of Pandit Bhajan Sopori 6. Compositions and Ragas of Pandit Bhajan Sopori 7. A True Guru and Interviews. Conclusion, Bibliography, Appendix.

08. PURASKAR NIRWAN

A Comparative study of Hindustani Notation System of Pt.V.N. Bhatkhande and Western Notation System

Supervisor: Prof. Gurinder Harnam Singh

Th 28405

Abstract

Music, a universal and timeless form of human expression, has shaped cultures, societies, and civilizations. It connects emotional, intellectual, and spiritual dimensions, making it integral to human existence. The evolution, preservation, and

dissemination of musical traditions rely heavily on structured notation systems, which document, communicate, and advance musical heritage. This research explores the Hindustani and Western music notation systems, analyzing their historical development, transformation, and contemporary relevance. Hindustani music traces its roots to the Vedic period, with oral transmission (guru-shishya parampara) as the primary means of preservation. This approach fostered improvisation and deep personal mentorship but lacked standardization. The introduction of formal notation by Pt. Vishnu Narayan Bhatkhande and Pt. Vishnu Digambar Paluskar in the 20th century revolutionized Hindustani music education. Pt. Bhatkhande's classification of ragas into thaats and Pt. Paluskar's efforts in institutionalizing music education played a pivotal role in its documentation and accessibility. While Hindustani notation retains flexibility for improvisation, it faces challenges in capturing intricate rhythmic nuances. Western music notation, rooted in ancient Greek theories, evolved significantly from neumes in medieval times to the staff notation introduced by Guido d'Arezzo. Innovations by composers like Bach, Beethoven, and Mozart further refined the system, enabling the precise documentation of harmony, rhythm, and dynamics. Western notation ensures musical compositions remain accessible across centuries but struggles to accommodate microtonal variations and spontaneous improvisation. Comparing these systems highlights their distinct strengths and cultural influences. Hindustani notation emphasizes melodic fluidity, while Western notation prioritizes precision. Emerging hybrid approaches attempt to bridge these differences, fostering cross-cultural collaboration. This study underscores the role of notation in preserving music traditions while evolving to meet contemporary challenges, ensuring music remains a dynamic and universal language.

Contents

1. Hindustani Music Notation System 2. Western Music Notation System 3. Hindustani And Western Musical Notations 4. Data Analysis And Discussion 5. Conclusion.

09. PANDE (Madhulika)
Concept of Sankeerna Ragas in Hindustani Classical Music: An Analytical Study.
Supervisors: Prof. Alka Nagpal & Prof. Anupam Mahajan
<u>Th 28405</u>

Abstract

Hindustani classical music, with its deep historical roots and expansive aesthetic philosophy, is fundamentally structured around the raga system. Ragas serve not only as melodic frameworks but also as emotive and expressive entities that define the very character of the music. Over time, the system has evolved with remarkable depth and nuance, continuously shaped by cultural influences and artistic innovations. Within this rich tapestry, the concept of Sankeerna ragas holds particular significance. A Sankeerna raga—also referred to as a mixed or compound raga—is the result of a creative synthesis of two or more distinct ragas. Unlike a mere alternation of melodic elements, these ragas represent a cohesive musical identity formed through a sensitive interweaving of multiple melodic structures. The study of such ragas demands not only an understanding of their technical formation but also an appreciation of their aesthetic and emotional impact. Sankeerna is not an isolated term; it appears across various dimensions in Hindustani music, including rhythm (sankeerna taal), melodic movement (sankeerna sthayi), and composition forms (sankeerna taan), highlighting a larger pattern of creative convergence. This research, titled "Concept of Sankeerna Ragas in Hindustani

Classical Music: An Analytical Study", aims to explore these complex forms in depth. It investigates how Sankeerna ragas have developed, how they are composed and rendered, and how they continue to be innovated by contemporary musicians. The study also examines the theoretical and practical distinctions between terms like jod, mishra, and sankeerna, focusing on how these concepts have been interpreted from ancient treatises to modern performances.

Contents

1. Raga: Origin and Development 2. Classification of Ragas 3. Sankeerna Ragas: Etymology 4. Analysis of Combination of Two Ragas 5. Analysis of Combination of More Than. Conclusion. Bibliography. Appendix

10. पाण्डेय (श्रीप्रकाश)

पंडित गजानन बुवा जोशी की गायकी एवं सांगीतिक रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो . अलका नागपाल

Th 28733

सारांश

विकास के सुदीर्घ कालखंड में भारतीय शास्त्रीय संगीत गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से विकसित होता चला आया है। इसके अंतर्गत कुछ शताब्दियों से ख्याल गायकी के विभिन्न घरानों का उद्भव एवं विकास हुआ। किसी विद्वान गुरु की विशिष्ट गायकी अर्थात गायनशैली का उनके शिष्यों एवं प्रशिष्यों द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनुसरण, प्रचार तथा विकास के फलस्वरूप विशिष्ट गायकी के ग्वालियर, आगरा, जयपुर, किराना, रामपुर-सहसवान, पटियाला आदि जैसे विभिन्न घराने प्रचार में आए। अपनी-अपनी विशिष्ट गायन-पद्धतियों के इन विभिन्न घरानों के अनेक महान गायकों ने ख्याल विधा के प्रचार एवं प्रतिष्ठावृद्धि में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक ख्याल गायक ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने एक से अधिक घरानों की गायन शैली को विधिवत सीखा और अपने कला-कौशल को अधिक समृद्ध किया। इनमें ग्वालियर, आगरा और जयपुर, इन तीन घरानों की गायकी को समान प्रामाणिकता और सौंदर्य के साथ प्रस्तुत करने वाले एक असाधारण और बहुआयामी कलाकार थे पंडित गजानन राव जोशी, जो पंडित गजानन बुवा जोशी के नाम से सुविख्यात हुए। ग्वालियर घराने के महान संगीतज्ञ पंडित अनंत मनोहर जोशी के सुपुत्र पंडित गजानन बुवा जोशी ने श्रेष्ठ गायक होने के साथ-साथ एक अप्रतिम वायलिन वादक के रूप में भी विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की। 13 जनवरी 1911 को जन्मे गजानन बुवा जोशी बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे और गायन तथा वायलिन वादन, दोनों में उनकी समान रूप से गहरी रुचि रही। उनके पिता पंडित अनंत मनोहर जोशी स्वयं ग्वालियर घराने के एक मूर्धन्य गायक थे। अतः संगीत शिक्षा उन्हें अपने पिता से ही प्राप्त हुई। तत्पश्चात् अपने पिता के ही गुरु भाई, पंडित रामकृष्ण बुवा वझे से भी उन्होंने गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। अन्य घरानों की गायकी को समझने की जिज्ञासा उन्हें जयपुर घराने के उस्ताद भुर्जी ख़ाँ और आगरा घराने के उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ के सान्निध्य तक ले गई, जहाँ से उन्होंने इन दोनों घरानों की विशिष्ट शैलियों को भी आत्मसात किया। इस प्रकार उनकी गायकी में ग्वालियर, जयपुर और आगरा घरानों की गायकी का संतुलित और मौलिक समन्वय दृष्टिगोचर होता है। एक श्रेष्ठ गायक होने के साथ-

साथ उत्कृष्ट वायलिन वादक होना उन्हें अद्वितीय कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित करता है। इसके साथ ही श्रेष्ठ तबला वादक पंडित विनायक राव घांघरेकर से तबले की शिक्षा प्राप्त करने के फलस्वरूप लय और ताल पर उनकी पकड़ भी अत्यंत अच्छी थी। केवल एक उत्कृष्ट गायक एवं वादक के रूप में ही नहीं अपितु एक श्रेष्ठ गुरु के रूप में भी पंडित गजानन बुवा जोशी प्रख्यात हुए। उन्होंने निस्संकोच मुक्त हृदय से विद्यादान किया और अनेक सुयोग्य शिष्य तैयार किए। पंडित गजानन बुवा जोशी की शिष्य-परंपरा भी अत्यंत समृद्ध है, जिसमें उनके अनेक शिष्य भी प्रतिष्ठित कलाकारों के रूप में सुविख्यात हैं। इनमे विदुषी जयश्री पाटनेकर, पंडित अरुण कशालकर, पंडित उल्हास कशालकर (पद्मश्री), डॉ. विकास कशालकर, विदुषी शुभदा पराड़कर, विदुषी पद्मा तलवलकर, विदुषी वीणा सहस्त्रबुद्धे, पंडित मधुकर जोशी (पुत्र), पंडित मनोहर जोशी (पुत्र), डॉ. सुचेता जोशी बिडकर (पुत्री) आदि उल्लेखनीय है। सौभाग्य से मेरे गुरु एवं शोध निर्देशक, प्रोफ़ेसर ओजेश प्रताप सिंह, उन्ही की शिष्य परंपरा में पंडित उल्हास कशालकर के वरिष्ठ शिष्य हैं। जिनकी प्रेरणा से पंडित गजानन बुवा जोशी की आकर्षक गायन शैली एवं सांगीतिक रचनाओं तथा उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के गहन अध्ययन की अभिलाषा ही इस शोध-विषय के चयन का आधार बनी।

विषय सूची

1. पं. गजानन बुवा जोशी का प्रारम्भिक जीवन एवं संगीत शिक्षा 2. पं. गजानन बुवा जोशी का व्यक्तित्व 3. पं. गजानन बुवा जोशी- गायक के रूप में 4. पं. गजानन बुवा जोशी- वायलिन वादक के रूप में 5. पं. गजानन बुवा जोशी गुरू के रूप में 6. पं. गजानन बुवा जोशी की गायकी का विश्लेषणात्मक विवेचन 7. पं. गजानन बुवा जोशी की सांगीतिक रचनाओं का विश्लेषणात्मक विवेचन। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

11. BAHL (Mohiena)
Analytical Study of the Ragas Having Different Versions in Hindustani Music
Supervisor: Prof. Ojesh Pratap Singh
Th 28730

Abstract

Hindustāni Music is known to be one of the oldest forms of music which represents the richness of Indian tradition, and rāga is known to be the sole constituent through which it is presented. A rāga in general is a pre-defined melodic structure comprising of a prescribed ascending and descending order of notes which sounds pleasing to the listeners. Numerous rāgas have been established since the evolution of rāga music, which have been firmly based on the music systems provided by various scholars, musicians and musicologists over time as contributions for the development of Hindustāni Music. These rāgas (scales) have a disciplined structure containing of a strict set of notes and a specific way of their movement (chalan). The representation of these rāgas have been the same over the years by keeping the original prescribed scales intact in them. However, because of being an art form, the slightest chance of an alteration or a variation in a prescribed scale finds a place through the artists representing it, which thus results into the emergence of the different versions in rāgas. Gharāna tradition plays a vital role in the emergence of such versions, as vocalists evidently keep the different singing styles present in a pre-existing rāga based on the Guru–shishya tradition that they follow. Rāgānga system and the in-take

of the different variants of swara and swara combinations become important aspects in the emergence of such different versions in certain rāgas. It is evident to have different versions of rāgas because of the possibilities of rāga music as a practical art form, followed by the different perception and the understanding of a rāga by every individual, which thus leads one to render a rāga accordingly.

Contents

1. Essence of Raga In Hindustani Music 2. Emergence of Different Versions In Ragas 3. RĀgas Having Different Versions 4. Compositions in Ragas Having Different Versions. Conclusion. Bibliography.

12. BHATTACHARYA (Anshuman)
Elements of Indian Classical Music in the Composition of Music Director Khayyam
Supervisor: Alka Nagpal
Th 28731

Abstract

Mohammad Zahur Khayyam is a music director whose songs I have grown up listening to from my parents. His work is a beautiful bridge that connects and blends the intricacies of Indian Classical music into the more emotional immediacy of Film Music. By the time I started learning music, his songs caught my attention every time I heard any of his song, for the melodious composition, the use of classical music in it and particularly a very catchy style of compositions, which later I found out was the combination of Indian classical and minimal instruments, and famously known as the Khayyam style. The present study, titled - "The elements of Indian Classical Music in tha compositions of Music Director Khayyam" aims to understand the relationship between Indian classical music and Khayyam's composition and how he has helped in maintaining the balanced traditional and modern. The First Chapter "The origin and Development of Indian Classical Music and Film Music" The 2nd Chapter "Biography of Khayyam" The third chapter "The Elements of Indian Classical Music" The fourth chapter "Interviews and notations of Few Songs"

Content

1. The Origin and Development of Indian classical music and Film music 2. Biography of Khayyam 3. Elements of Indian Classical Music 4. Interviews and Notations of Few Songs. Conclusion. Appendix. Bibliography.

13. BRAHMANSHI SHEKHAR
The Influence of Shringara Rasa in Khayal Compositions.
Supervisor: Prof. Shailender Kumar Goswami
Th 28811

Abstract

This dissertation examines the profound influence of Śṛṅgāra Rasa, the "king" of rasas, on Khayāl compositions in Hindustani classical music. Tracing its theoretical roots to Bharata's Nāṭyaśāstra, where the systematic relationship between bhāva (emotion) and rasa (aesthetic experience) is first articulated, the study explores how Śṛṅgāra has shaped Indian poetry, drama, visual arts, and, crucially, musical traditions. The thesis investigates the bifurcation of Śṛṅgāra into Sambhoga (love in union) and Vipralambha (love in separation), as reflected in the Ashta-Nāyikā (eight

heroines) typology, and its manifestation in both literary and musical forms. Through an interdisciplinary methodology combining textual analysis, historical research, and in-depth interviews with musicians and scholars, the work details how Khayāl bandishes employ emotive prose, metaphor, and regional linguistic diversity to evoke Śṛṅgāra. The study also situates Khayāl within broader developments, including the evolution of the Rāga-Rāgini system and the extra-musical classification of dramatic and poetic themes. The research is structured in four chapters: the foundations of Rasa theory and Śṛṅgāra, the role of Śṛṅgāra in Dhrupad, the interpretation of Śṛṅgāra in Khayāl compositions, and a musical analysis of Śṛṅgāra kāvya. By presenting a comprehensive list of over 1500 Śṛṅgāra-centric bandishes, the dissertation offers an invaluable reference for further musicological study. Ultimately, the thesis demonstrates that Śṛṅgāra Rasa is indispensable to the aesthetic and expressive richness of Khayāl, shaping its poetic imagination, musical structure, and cultural resonance.

Contents

1. Introduction to Shringara Rasa 2. Shringara Rasa Kāvya in Dhrupad 3. Shringara Rasa in Khayal Compositions 4. Shringara Kavya and its Musical Analysis. Conclusion. Bibliography.

14. लक्ष्मी

संगीत - पारिजात` में वर्णित सांगीतिक वाद्य - विश्लेष्णात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. अशोक यादव एवं प्रो. अनुपम महाजन

Th 28734

सारांश

भारतीय संगीत में वाद्यों का वैज्ञानिक रूप से परिभाषित स्थान रखा गया है! संगीत पारिजात के अंतरगत हमें वाद्यों के चतुर्विद -वाद्यों का विस्तार पूर्व अध्ययन प्राप्त होता है! पंडित अहोबल द्वार ही सर्वप्रथम कोमल स्वरों से परिचित कार्य एवं सर्वप्रथम घन वाद्यों से वाद्यध्याय की शुरुआत की, समान्यता अन्य ग्रंथकार द्वार सर्वप्रथम तत्वाद्यों से उल्लेख प्राप्त होता है।

विषय सूची

1. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में वाद्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. 'संगीत पारिजात' का ऐतिहासिक विवरण 3. संगीत पारिजात में वर्णित तत् वाद्यों का विशलेषणात्मक अध्ययन 4. संगीत पारिजात में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन 5. पं. अहोबल कृत ग्रंथ संगीत पारिजात के अंतर्गत सुषिर एवं घन वाद्यों का विवेचन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

15. श्रीवास्तव (अनुपूर्णा)

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तिहाई की भूमिका एवं महत्त्व- एक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. राजीव वर्मा

Th 28411

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में उत्पत्ति संरचनात्मक प्रकारों और प्रदर्शनात्मक कार्यों का निरूपण करता है. जीवन प्रदर्शन परम्पराओं के संगम पर स्थित यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि कैसे तिहाई एक लयबद्ध सूत्र के रूप में उभर कर कलात्मक अभिव्यक्ति को आकार देता है. मात्रात्मक तालचक्रों और आवृति को व्याख्यात्मक आशय और तात्कालिकता पर गुणात्मक आख्यानों के साथ त्रिभुजित किया जाता है. वाक्यांश लम्बाई मैट्रिक उपविभाजन और विषयगत पुनरावृति द्वारा वर्गीकृत तिहाई संरचनाओं के एक समृद्ध वर्गीकरण को प्रगट करती है. एक सौंदर्यात्मक लय के रूप में कार्य करने के अलावा तिहाई एकल कलाकार और संगतकार के बीच गतिशील तनाव मुक्ति और संवादात्मक अंतर्क्रिया के लिए एक उपकरण के रूप में भी कार्य करता है. श्रोता इस बात की पुष्टि करते है तिहाई अनुक्रमों में निपुणता एक प्रदर्शन के भीतर कथित सुसंगति और भावनात्मक चरमोत्कर्ष को बढ़ती है. तिहाई एक समापन जो कभी अंत नहीं होता केवल तीन नहीं वह मंच की आखिरी दीप रेखा है जहाँ कलाकार अपनी भावनाओं को समेट दर्शक की आँखों में लय की लौ छोड़ जाता है. प्रत्येक तिहाई से जैसे राग का पर्दा गिरता है लेकिन संगीत की गूंज पीछे रह जातीं है. तिहाई- त्रिवेणी संगम की लहरों सी जहाँ लय भाव और परम्परा एक साथ बहते है. यह संगीत का वह बिंदु है जहाँ ठहराव भी एक गति बन जाता है. प्रस्तुत शोध प्रबंध का निष्कर्ष यह है की तिहाई एक समापन उपकरण के रूप में अपनी पारम्परिक भूमिका से आगे बढ़कर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में एक केंद्रीय रचनात्मक उत्प्रेरक बन गया है. सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक अनुप्रयोगों का संयोजन करके यह अध्ययन संगीत सम्बन्धी साहित्य को आगे बढ़ता है और कलाकारों एवं शिक्षकों के लिए व्यवहारिक दिशानिर्देश प्रदान करता है. यह हिंदुस्तानी प्रदर्शन कि सांस्कृतिक पहचान को आकर देने में लय की स्थायी जीवंतता को रेखांकित करता है और भविष्य के अन्वेषण के लिए उपजाऊ जमीन की पहचान करता है जिसमे कर्णाटक संगीत रूपांतरों के साथ तुलनात्मक अध्ययन और लयबद्ध उपज का गणितीय जटिल प्रणालियाँ शामिल है. साक्षात्कारों ने दर्शाया कि तिहाई न केवल प्रस्तुति को सघन बनती है बल्कि श्रोताओं की भावनात्मक प्रतिक्रिया को भी गहरायी प्रदान करती है.

विषय सूची

1. भारतीय संगीत की उत्पत्ति और विकास 2. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तिराई ;अवनद्ध वाद्य के विशेष संदर्भ मेंद्ध 3. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायन विधा में तिराई 4. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की वादन विधा में तिराई 5. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की नृत्य विधा में तिराई। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

16. सिंह (करनजीत)

गुरमत संगीत की प्रस्तुति में नवीन प्रवृतियाँ : एक समालोचनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. राजपाल सिंह

Th 28735

सारांश

गुरमत संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट आध्यात्मिक धारा है, जिसका मूल उद्देश्य भक्ति, ध्यान और आत्मिक उन्नति है। यह संगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड़ाव का माध्यम है। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी तक सभी दस गुरु साहिबानों ने संगीत को साधना और संदेश का साधन बनाया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित वाणी विश्व का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो पूर्णतः राग आधारित है। इसमें 31 मुख्य रागों के माध्यम से भक्ति, प्रेम, और मानवता का संदेश दिया गया है। समय के परिवर्तन के साथ गुरमत संगीत की प्रस्तुति में अनेक नवीन प्रवृतियाँ उभरकर सामने आई हैं। आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों, रिकॉर्डिंग तकनीक, मंचीय प्रस्तुति और सोशल मीडिया के माध्यम से गुरमत संगीत का प्रसार विश्व स्तर तक पहुँचा है। विश्वविद्यालयों और संस्थानों में इसकी औपचारिक शिक्षा ने भी नई पीढ़ी को इस परंपरा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि इन नवीन प्रवृतियों से लोकप्रियता और पहुंच बढ़ी है, परंतु कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले हैं। पारंपरिक राग-संरचना, लय-शुद्धता और भक्ति-भाव में कमी का अनुभव किया गया है। कई बार प्रस्तुति का उद्देश्य भक्ति की बजाय प्रदर्शन प्रधान हो जाता है, जिससे इसकी मूल आत्मा प्रभावित होती है। समालोचनात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। गुरमत संगीत तभी सार्थक रहेगा जब इसमें तकनीकी नवाचार के साथ-साथ राग की पवित्रता, मर्यादा और भक्ति का भाव सुरक्षित रहेगा। यही संतुलन गुरमत संगीत की वास्तविक पहचान और उसकी आध्यात्मिक शक्ति को बनाए रखेगा।

विषय सूची

1. गुरमत संगीत की पृष्ठभूमि, उद्गम एवं विकास 2. गुरमत संगीत गायन स्वरूप 3. हिंदुस्तानी कीर्तन परम्पराएं और गुरमत संगीत 4. गुरमत संगीत प्रस्तुतिकरण। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

17. सोनी (पूजा)

राजस्थान के प्रमुख संग्रहालयों में संगीत वाद्यों का महत्व एवं वर्तमान स्थिति ।

निर्देशक : प्रो. राजीव वर्मा

<u>Th 28409</u>

सारांश

संग्रहालय सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं आजादी के पश्चात जब से भारत की सभी रियासतों के साथ राजस्थान में सामंती शासन का एकीकरण हुआ है कब से राज परिवारों की बहुमूल्य वस्तुएं जैसे विभिन्न वाद्य यंत्र आदि को उनके द्वारा संभाल कर रखा गया है जिनकी संख्या बहुतायत में है विशेष कर वाद्य यंत्रों की संख्या कितनी है कि एक स्वतंत्र वाद्य यंत्र संग्रहालय का निर्माण हो सकता है वर्तमान में आधुनिक इतिहास कला संस्कृति को भी विभिन्न संग्रहालय द्वारा संग्रहित और संरक्षित किया जा रहा है। प्रसिद्ध शोध कार्य के विस्तृत अध्ययन की सुविधा को देखते हुए इसे पांच अध्याय में विभक्त कर शोध कार्य को

संपन्न करने का प्रयास किया गया है प्रथम अध्याय में राजस्थान की सांस्कृतिक इतिहास और संग्रहालय की सूची का विस्तृत विवरण किया गया है द्वितीय अध्याय में राजस्थान में संग्रहित वाद्य यंत्रों की वर्तमान स्थिति को बताया है जिसमें संग्रहित मध्य किसी राज्य या विशिष्ट व्यक्ति से लिए हैं यह संग्रहालय में कब रखे गए हैं प्रचलित है या नहीं बचाने योग्य है या नहीं इसका अध्ययन किया गया है तृतीय अध्याय में गुणीजन खानो और संग्रहालय में वाद्यवृंद को बताया गया है चतुर्थ अध्याय में संग्रहालय में संग्रहित वीडियो में उनमें उपस्थित बाधक कलाकारों का साक्षात्कार लिया गया है अंतिम अध्याय में संग्रहालय में भारतीयों की रखरखाव में आने वाली समस्याओं और उनके समाधान के साथ वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हुए इस शोध कार्य को पूर्ण किया गया है|

विषय सूची

1. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास एवं संग्रहालय सूची 2. राजस्थान के प्रमुख संग्रहालयों में संग्रहित वाद्ययंत्रों की वर्तमान स्थिति 3. गुणीजनखानों एवं संग्रहालयों में वाद्यावृदं वादन (आर्केस्ट्रा, बैड़वादन, नक्कारखाना) 4. संग्रहालयों में संग्रहित वाद्य एवं संग्रहालय में उपस्थित वादक कलाकारों का साक्षात्कार 5. संग्रहालयों में वाद्यों के रखरखाव की समस्याएँ व समाधान एवं वर्तमान स्थिति । उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।